Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 4, April - 2026

DOIs:10.2018/SS/202604015 --:-- Research Paper / Article / Review

विविध शिक्षार्थियों की भाषा प्रवीणता पर समावेशी डिजिटल शिक्षण रणनीतियों का प्रभावः

[1] आकांक्षा सिंह, [2] डॉ. राजेन्द्र बहादुर सिंह
[1] शोधार्थी, शोध संस्थान- वी.एस.एस.डी.कानपुर(CSJM University Kanpur)
[2], शोध निर्देशक, पदभार- असिस्टेंट प्रोफेसर एम.एड.विभाग, वी.एस.एस.डी.कॉलेज कानपुर
Email - akiabhi143@gmail.com

सारांशः यह शोध पत्र विविध शिक्षार्थियों की भाषा प्रवीणता पर समावेशी डिजिटल शिक्षण रणनीतियों के प्रभाव का अध्ययन करता है। वर्तमान वैश्विक शिक्षा परिदृश्य में डिजिटल तकनीकी नें शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को अत्याधिक प्रभावित किया है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि बहुभाषी डिजिटल सामग्री,सहायक प्रौद्योगिकी,अनुकूली शिक्षण प्रणाली और अतः क्रियात्मक ऑनलॉइन मंच भाषा शिक्षण को किस प्रकार अधिक प्रभावी,सुलभ और छात्र केन्द्रित बनाते है। विशेष रूप से समावेशी शिक्षा के सन्दर्भ में डिजिटल शिक्षण रणनीतियाँ विविध पृष्ठभूमि के शिक्षार्थियों के लिये नई संभावनायें प्रस्तुत करती है। शोध साहित्य के विश्लेषण से पता चलता है कि ऐसी रणनीतियाँ सुनना,बोलना,पढ़ना और लिखना इन सभी भाषा कौशलों को बेहतर करती है।विशेषकर उन शिक्षार्थियों के लिये जिनकी पृष्ठभूमि,भाषा सीखने की गति या शैक्षिक आवश्यकता अलग-अलग होती है, साथ ही यह स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण डिजिटल अवसंरचना और संसाधनों की समान उपलब्धता इन रणनीतियों की सफलता के लिये अनिर्वाय है। प्रस्तुत अध्ययन में गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि समावेशी डिजिटल रणनीतियाँ भाषा प्रवीणता को बढ़ानें में महत्वर्पूण भूमिका निभाती है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से वर्तमान समय में समावेशी डिजिटल रणनीतियाँ किस प्रकार शिक्षार्थियों के लिये लाभकारी है एंव सिखनें के अवसर प्रदान करती हैं,इसका पता लगाया गया है। हम कह सकते कि इस अध्ययन के माध्यम से भविष्य के शिक्षार्थियों को जागरूक बनाया जा सकता है।

मुख्य बिन्दुः समावेशी शिक्षा, भाषा प्रवीणता, डिजिटल शिक्षण, विविध शिक्षार्थी, ई-लर्निग ।

1.प्रस्तवनाः

समावेशी शिक्षा का मूल उद्देश्य प्रत्येक शिक्षार्थी को उसकी विविधता के बावजूद भी समान अवसर प्रदान करना है। समावेशी शिक्षा का मूल उद्देश्य यह सुनिश्त करना है कि हर शिक्षार्थी को उसकी आवश्यकता,क्षमता,भाषा और सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुरूप सीखने को मिले। विविध शिक्षार्थीयों में वे छात्र शामिल होते हैं जो विभिन्न भाषाओं,संस्कृतियों,आर्थिक परिस्थितियों और सीखनें की क्षमताओं से आते हैं। ऐसे शिक्षार्थीयों के लिये पांपरिक शिक्षण विधियाँ अक्सर अपर्याप्त होती है। आज के डिजिटल युग में शिक्षा प्रणाली तेजी से परिर्वतित हो रही है। पारंपरिक शिक्षण विविधयों की तुलना

में डिजिटल शिक्षण ने शिक्षार्थीयों को अधिक स्वतंत्रता,लचीलापन और विविध संसाधनों तक पहुच प्रदान की है। डिजिटल प्रौद्योगिकी इस लक्ष्य को आगे बढ़ानें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है,क्योंकी यह सामग्री को अनेक रूपो में प्रस्तुत करती है जैसे- पाठ,ध्वनि विडियो,संवादात्मक गतिविधियाँ और स्व गति से सिखने के अवसर प्रदान करती हैं।

भाषा प्रवीणता शिक्षा का एक महत्वपूर्ण घटक है,क्योंकी यह न केवल सम्प्रेषण का माध्यम है,बल्कि ज्ञान अर्जन का साधन भी है। विविध शिक्षार्थीयों के लिये भाषा सीखना कई बार चुनौतिपूर्ण होता है,विशेष कर तब जब शिक्षण व्यवस्था उनकी आवश्यकतों के अनुरूप न हो। भाषा प्रवीणता के विकास में डिजिटल शिक्षण रणनीतियाँ विशेष रूप से उपयोगी हैं,क्योंकी भाषा सीखना केवल पाठय पुस्तक आधारित प्रक्रिया न होकर सहभागिता,अभ्यास और प्रतिपुष्टि आधारित प्रक्रिया है। आज की कक्षाओं में विद्यार्थी भाषाई,सांस्कृतिक और तकनीकी दृष्टि से बहुत विविध है,इसीलिये एक समान व्यवस्था सभी पर समान रूप से प्रभावी नही हो सकती है। डिजिटल माध्यम जैसे- विडियो,ऑडियो,इंटरैक्टिव एप्लिकेशन और अनुकूली सॉफ्टवेयर शिक्षार्थीयों की भाषा सीखने की प्रक्रियाओं को सरल और प्रभावी बना सकते हैं।

2.अध्ययन की आवश्यकताः

- विविध शिक्षार्थीयों की संख्या में बढ़ोत्तरी करने के लिये।
- बहुभाषी कक्षाओं का विस्तार करने के लिये।
- डिजिटल माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के भाव को बढ़ाने के लिये।
- भाषा कौशल के विकास में असमानता को दूर करने के लिये।

आज के समय में यह आवश्यक हो गया है कि ऐसी शिक्षण रणनीतियाँ विकसित की जाये जो सभी प्रकार के शिक्षार्थीयों को समान अवसर प्रदान करें। इसी कारण यह शोध यह जाननें का प्रयास करता है कि समावेशी डिजिटल शिक्षण रणनीतियाँ भाषा प्रवीणता में सुधार कैसे लाती है।

3.अध्ययन के उद्देश्यः

1- समावेशी डिजिटल शिक्षण रणनीतिओं की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2- विविध शिक्षार्थीयों भाषा प्रवीणता पर इनके प्रभाव का विश्लेषण करना।
3- भाषा शिक्षा में डिजिटल शिक्षण में आने वाली चुनौतियों की पहचान करना।
4- भाषा शिक्षण के लिये व्यवहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

4.साहित्य समीक्षाः

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार समावेशी डिजिटल शिक्षा में बहुभाषी सामग्री,सहायक प्रौद्योगिकी,खुला शैक्षिक संसाधन और अनुकूली प्लेटफॉर्म को महत्वपूर्ण माना गया है। इन संसाधनों का उद्देश्य वंचित,ग्रामीण,दिव्यांग और प्रथम पीढ़ी शिक्षार्थीयों तक शिक्षा की पहुच को सुलभ बनाना एंव पहुचाना है।

अन्तराष्ट्रीय अध्ययन यह दिखाते हैं कि प्रौद्योगिकी समर्थित भाषा अधिगम पढ़नें,लिखनें और बोलनें में सुधार हो सकता है,विशेषकर तब जब गतिविधियाँ सवेदात्मक और व्यक्तिगत हों। एक हालिया अध्ययन से यह भी पता चला है कि डिजिटल साक्षरता और भाषा प्रवीणता के बीच सकारात्मक सम्बंध होता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि तकनीक केवल सहायक ही नही बल्कि सीखने की गति देने वाली शक्ति भी प्रदान कर सकती है।

समावेशी शिक्षा पर उपलब्ध शोधों से यह पता चलता है कि सहयोगात्मक अधिगम, परियोजना आधारित अधिगम और सामाजिक अधिगम जैसी रणनीतियाँ डिजिटल उपकरणों के साथ मिल कर अधिक प्रभावी बन जाती है,बशर्ते उन्हें छात्रों

की जरूरतों के अनुसार अनुकूलित किया जाये। वहीं डिजिटल समावेशन पर साहित्य यह भी चेतावनी देता है कि यदि डिजिटल विभाजन बना रहा,नई तकनीकें असमानता को और बढ़ावा दे सकती है।

भारतीय अध्ययनः

लौर,बबीता(2017) कक्षा 11 के छात्रों में जीव विज्ञान में उपलब्धि पर डिजिटल शिक्षण प्रणाली और अकादमिक प्रेरणा का प्रभाव,इस अध्ययन में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में पाया गया कि नवीनचम डिजिटलीकृत प्रारूपों या शिक्षण विधियों को शामिल करने से जीव विज्ञान के छात्रों की उपलब्धि बढ़ती है और उन्हें नये अवसर मिलते हैं। इस अध्ययन में शैक्षिक प्रेरणा एक अभिन्न अंग है,जो छात्रों को सशक्त व्यक्तित्व निमार्ण,निणर्य लेने की क्षमता और समस्या समाधान कौशल सुधार में मदद कर सकती है।

बंसल,चारू(2020) माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में जीवन कौशल विकास,अधिगम कौशल और डिजिटल साक्षरता पर शिक्षा में डिजिटलीकरण का प्रभाव,प्रस्तुत अध्ययन में एक्स-पोस्ट-फैक्टो अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के उद्देश्यों को पूरा करने के लिये ,मानदंड समूह डिजाइन का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन के परिणाम से यह पता चलता है कि अधिकांश छात्रों ने जीवन कौशल में अच्छा और बहुत अच्छा स्तर का प्रदर्शन किया। डिजिटल शिक्षा अनुभव वाले छात्रों ने रचनात्मक सोच के मामले में बेहतर प्रदर्शन किया।

कुमार,के विनय(2025) स्नातक छात्रों के पठन कौशल को बढ़ाने के लिये सूचना एंव संचार प्रौद्योगिकी उपकरणें का एकीकरण एक प्रायोगिक अध्ययन,इस अध्ययन में शोधकर्ता नें उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण विधि से आंध्र प्रदेश के डॉ.वाई.एस.आर.कॉलेज ऑफ हॉर्टिकल्चर के बी.एस.सी.प्रथम वर्ष के 56 छात्रों का चयन किया। छात्रों की पठन क्षमताओं को बढ़ाने के लिये सूचना एंव संचार प्रौद्योगिकी के एकीकरण के प्रति सकारात्मक धारणा है। टेक्स्ट-टू-स्पीच,वन लाइन फोकस,ग्रामर फिल्ट्रेशन और सिलेबिफिकेशन जैसी सुविधाओं नें छात्रों को पाठ को आसानी से समझने में मदद की है।

अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययनः

पेरी,एफ. (2021) उच्च शिक्षा में अंग्रेजी भाषा प्रवीणता विकसित करने के लिये अंतर्निहित डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग, यह शोध पत्र यह दर्शाता है कि डिजिटल उपकरण उच्च शिक्षा विषयों के संर्दभ में भाषा सीखने,शब्दावली बढ़ाने और सांस्कृतिक संचार के मानदण्डों को समझने का अवसर प्रदान करते है। इस क्षेत्र में योगदान के संर्दभ में यह शोध पत्र बताता है कि डिजिटल उपकरण प्रमाणिक,कार्य- आधारित शिक्षण का अवसर प्रदान करते है जो छात्रों के लिये अंग्रेजी भाषा शिक्षण को बेहतर बनाता है।

झांग,जियुन,यांग,रूझ्क्सी(2025) प्रौद्योगिकी के माध्यम से वैयक्तिकृत भाषा अधिगमः डिजिटल साक्षरता किस प्रकार दक्षता और संचार रणनीतियों को आकार देती है,इसका विश्लेषण,यह शोध डिजिटल साक्षरता और भाषा प्रवीणता के बीच संबन्ध का पता लगाता है,जिसमें भाषा अधिग्रहण और संचार दृष्टिकोण पर डिजिटल साक्षरता के प्रभाव पर जोर दिया गया है। इसमें मात्रात्मक अनुसंधान विधि को अपनाया गया है। इस अध्ययन के परिणाम से डिजिटल साक्षरता और भाषा प्रवीणता के बीच एक मजबूत और सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सकारात्मक संबन्ध का पता चलता है।

5.शोध विधिः

5.1- अध्ययन का स्वरूपः

यह शोध पत्र गुणात्मक शोध विधि पर आधारित अध्ययन है। इस शोध का उद्देश्य विविध शिक्षार्थियों की भाषा प्रवीणता पर समावेशी डिजिटल शिक्षण रणनीतियों के प्रभाव को गहरायी से समझना है। गुणात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से शिक्षार्थियों और शिक्षकों के अनुभवों,विचारों एंव व्यवहारों का विश्लेषण किया गया है।

5.2- अध्ययन का क्षेत्र एंव नमूनाः

यह शोध कानपुर नगर के चयनित विद्यालयों/शैक्षणिक संस्थानों पर आधारित है,जिसमें उत्तर प्रदेश माध्यमिक विद्यालय एंव केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय शामिल है। जहाँ पर डिजिटल शिक्षण का उपयोग करके शिक्षार्थियों को पढ़ाया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत एकत्र करने के लिये उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन विधि का उपयोग किया गया है। इस शोध में चयनित विद्यालयों/शैक्षणिक संस्थानों में से प्रतिभागी के रूप में 10 शिक्षकों एंव 20 शिक्षार्थियों जो विविध पृष्ठभूमि जैसे धीमे सीखने वाले,बहुभाषी आदि क्षेत्र आते है का चयन किया गया।

5.3- प्रदत संग्रह के स्त्रोतः

1. प्राथमिक स्त्रोतः

साक्षात्कारः

इसके अंतर्गत शिक्षकों एंव शिक्षार्थियों का अर्ध-संरचित साक्षात्कार लिया गया,जिसमें कुछ प्रश्न पहले से ही तय थे और कुछ नये प्रश्न भी बातचीत के दौरान पूछे गये। शिक्षकों से डिजिटल शिक्षण रणनीतियों,उनके अनुभव और चुनौतियों के विषय में जानकारी ली गयी एंव शिक्षार्थियों से उनकी भाषा प्रवीणता,सीखने के अनुभव और डिजिटल कक्षा का उनके सीखनें पर क्या प्रभाव पड़ता है इसके विषय में जाना गया।

इसके साथ ही डिजिटल कक्षाओं का भी अवलोकन किया गया एंव शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत अनुभव को जाना गया।

2. **दिद्तीयक स्त्रोतः**

इसके अंतर्गत इस अध्ययन से संबन्धित शोध पत्रों,लेखों एंव जर्नल से समस्या से संबन्धित जानकारी एकत्र की गयी और इसके साथ ही ऑनलाइन शैक्षणिक सामग्री का भी अध्ययन किया गया।

5.4- प्रदत विश्लेषण विधिः

1. थीमैटिक विश्लेषणः

इसके अंतर्गत इस अध्ययन से संबन्धित संग्रहित प्रदत को विभिन्न थीमों में वर्गीकृत किया गया जो इस प्रकार है -

- भाषा प्रवीणता में सुधार
- डिजिटल उपकरणों की भूमिका
- विविध शिक्षार्थियों की सहभागिता
- सीखनें की चुनौतिया

इन थीम के माध्यम से छात्रों के मनोभाव को समझने का प्रयास किया गया,जिसमें यह देखा गया कि किस प्रकार शब्दों की समझ पठन को प्रभावित करती है। व्याकरण का ज्ञान वाक्य संरचना को समझने और अर्थ निकालने में प्रभावकारी है। संदर्भ के माध्यम से छात्रों ने अर्थ को समझने का प्रयास किया एंव प्रश्नोंत्तर के माध्यम से शिक्षकों नें भी छात्रों का मार्गदर्शन किया। छात्रों नें भी समूह चर्चा में सक्रिय सहभागिता निभायी।

2. व्याख्यात्मक दृष्टिकोणः

प्रदत का गहन विश्लेषण किया गया एंव उसके पीछे के अर्थ को समझा गया और निष्कर्ष निकाला गया, जिससे यह समझा गया कि डिजिटल शिक्षण रणनीतियाँ किस प्रकार भाषा सीखने को प्रभावित करती है।

6.परिणामः

डिजिटल शिक्षण उपकरण जैसे विडियो,ऑडियो और इंटरैक्टिव सामग्री भाषा सीखने को सरल बनाते हैं। समावेशी डिजिटल शिक्षण रणनीतियाँ भाषा प्रवीणता को कई स्तरों पर प्रभावित करती हैं। पहला बहुभाषी और दृश्य-श्रृव्य सामग्री

शब्दों को समझने में और अर्थ का निमार्ण करने में सहायक होती हैं, जिसमें कमजोर भाषा पृष्ठभूमि वाले छात्र भी विषय वस्तु को समझ पाते हैं। दूसरा टेक्स्ट-टू-स्पीच,स्क्रीन रीडर,कैप्शन और अनुवाद उपकरण जैसे सहायक साधन सुनने और पढ़नें की समझ को मजबूत बनाते हैं। तीसरा है अनुकूली मंच एंव इंटरएक्टिव अभ्यास विद्यार्थियों को अपनी समझ से अभ्यास करने की सुविधा प्रदान करते हैं,जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

समावेशी डिजिटल शिक्षण रणनीतियों का एक लाभ यह भी है कि ये कक्षा में कम बोलने वाले विद्यार्थियों को एक सरल अभ्यास करने वाला वातावरण प्रदान करती है उदाहरण के लिये एक बहुभाषी ऑनलॉइन मंच पर छात्र पहले ऑडियो सुन सकता,फिर वाक्य दोहरा सकता है एंव अन्त मे स्वचालित प्रतिपुष्टि प्राप्त कर सकते हैं। फिर भी कुछ सीमायें यह भी है कि यदि शिक्षक डिजिटल उपकरणों का उपयोग करना नही जानते हैं,या फिर छात्रों के पास उपकरण और इंटरनेट उपलब्ध नही है तो लाभ सीमित रह जाता है। समावेशी डिजिटल शिक्षा केवल तकनीक खरीदने का विषय नही,व्यवस्था,प्रशिक्षण एंव समान पहुच का विषय है।

7.चर्चाः

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि समावेशी डिजिटल शिक्षण रणनीतियाँ भाषा प्रवीणता के विकास में प्रभावी है,लेकिन उनका प्रभाव परिस्थितियों पर निर्भर करता है। जहाँ शिक्षक डिजिटल संसाधनों को शिक्षण उद्देश्य से जोड़ते है,वहाँ विद्यार्थी अधिक सक्रिय रूप में भाग लेते है और बेहतर परिणाम दिखता है। दूसरी ओर यदि सामग्री केवल डिजिटल रूप में उपलब्ध हो लेकिन वह सुलभ बहुभाषी या छात्र हितकारी न हो तो उसका लाभ कम हो जाता है।

इस संदर्भ में भारत जैसे बहुभाषी और विषम शैक्षिक परिवेश में समावेशी डिजिटल शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है। यहाँ भाषा शिक्षण को संस्कृति-सवेंदनशील,आवश्यकता-आधारित और तकनीक-सक्षम बनाना आवश्यक है। यही वह दिशा है जिससे शिक्षा अधिक न्यायसंगत और प्रभावी हो सकती है।

8.निष्कर्षः

समावेशी डिजिटल शिक्षण रणनीतियाँ विविध शिक्षार्थीयों की भाषा प्रवीणता को सकारात्मक से प्रभावित करती है। बहुभाषी सामग्री,सहायक तकनीक,अनुकूली अभ्यास और अंतः क्रियात्मक मंच भाषा अधिगम को अधिगम को अधिक सुलभ,प्रेरक और व्यक्तिगत बनाते हैं। हालाकि इनका पूर्ण लाभ तब सम्भव है जब शिक्षक प्रशिक्षित होंगे, डिजिटल संसाधन सभी तक पहुचे। इस प्रकार समावेशी डिजिटल शिक्षा भाषा प्रवीणता को सुधारने के साथ-साथ समानता और सहभागिता को भी आगे बढ़ाती है।

9.सुझावः

- विद्यालयों में बहुभाषी,सरल एंव सुलभ डिजिटल सामग्री उपलब्ध करायी जाये।
- शिक्षकों को भी समावेशी डिजिटल शिक्षण उपकरणों का प्रशिक्षण दिया जाये।
- टेक्स्ट-टू-स्पीच,स्क्रीन रीडर.कैप्शन और अनुवाद उपकरणों का उपयोग बढ़ाना चाहिये।
- ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में डिजिटल पहुच को बढ़ाने के लिये विशेष सहायता प्रदान की जाये।
- भाषा मूल्याकन के लिये लचीले और छात्र केन्द्रित तरीके अपनाने चाहिये।

सन्दर्भः

रिर्पोटः

1- एन.सी.ई.आर.टी., *समावेशी डिजिटल एंव डिजिटल प्रौद्योगिकी* ।

2- एलिया डी,अल.एट.पी., *समावेशी डिजिटल शिक्षा के लिये रणनीतियाँ* ।

जर्नल पेपरः

1- विक्रमरत्ने जगत,विमलारत्ने गितांजली,गूनतिल्लेके. विनीता(2008) *भाषा प्रवीणता की दिशा में अनुकूली और डिजिटल शिक्षण का मिश्रण सूचना और स्वचालन या स्थिरिता* चौथा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन,173-178,doi:10.1109/ICIAFS.2008.4783942.
2- सोलाक एकेम,काकिर रेसेप(2015) *तुर्की में भाषा सीखने वाले ऑनलॉइन शिक्षार्थीयों की भाषा सीखने की रणनीतियाँ* ई- लर्निग डिजिटल मिडिया 12 (1),107-120।
3- ली सियोंगजू,ड्रेसमैन मार्क(2018) *अंग्रेजी का अनौपचारिक डिजिटल शिक्षण और भाषा प्रवीणता* टेसोल क्वार्टरली 52 (2),435-445।
4- एंथोनीसामी लिलियन(2021) *डिजिटल लर्निग की प्रासांगिकता के लिये स्व नियमित शिक्षण रणनीतियों की जाँच* मलेशियन जर्नल ऑफ लर्निग एण्ड इंस्ट्रक्शन 18 (1),29-64।
5- पेरी,एफ.(2021) *उच्च शिक्षा में अंग्रेजी भाषा प्रवीणता विकसित करने के लिये अंतर्निहित डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग* । जर्नल ऑफ एकेडमिक लैंग्वेज एंड लर्निंग,15(11,1-12)
6- झांग,जियुन,यांग,रूइक्सी(2025) *प्रौद्योगिकी के माध्यम से वैयक्तिकृत भाषा अधिगमः डिजिटल साक्षरता किस प्रकार दक्षता और संचार रणनीतियों को आकार देती है,इसका विश्लेषण* https://doi.org/10.1111/jcal.70069

2 शोधः

1- लौर,बबीता(2017) *कक्षा 11 के छात्रों में जीव विज्ञान में उपलब्धि पर डिजिटल शिक्षण प्रणाली और अकादमिक प्रेरणा का प्रभाव* । http://hdl.handle.net/10603/298573
2- बंसल,चारू(2020) *माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में जीवन कौशल विकास,अधिगम कौशल और डिजिटल साक्षरता पर शिक्षा में डिजिटलीकरण का प्रभाव* । http://hdl.handle.net/10603/516218
3- खादीवाल,झलक मुकेश(2022) *मुंबई क्षेत्र में चुनिंदा शैक्षिक ई-ऐप्स के विशेष संदर्भ में डिजिटल शिक्षा के प्रति छात्रों की संतुष्टि पर अध्ययन* । http://hdl.handle.net/10603/487397
4- कुमार,के विनय(2025) *स्नातक छात्रों के पठन कौशल को बढ़ाने के लिये सूचना एंव संचार प्रौद्योगिकी उपकरणों का एकीकरण एक प्रायोगिक* अध्ययन । http://hdl.handle.net/10603/657970